Girls' High School and College, Prayagraj

Work Sheet No-1

Session (2020-21)

Class - 5 (A-F)

Subject - H.A.S

Topic - पाठ-1 कर्मवीर

निर्देश- कृपया अभिभावक यह सुनिश्चित करें कि बच्चे कविता को सही उच्चारण के साथ पढ़ें तथा मौखिक व लिखित कार्य को करने में बच्चों का सहयोग करें।

पाठ-1 कर्मवीर

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुःख भोग पछताते नहीं॥
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं॥
हो गए इक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले॥
आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही॥
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद चाहते हैं अपनी इस जगत में आप ही॥
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं॥
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की और जाति की होगी भलाई भी तभी॥

कवि- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अभ्यास कार्य-

1. 'कर्मवीर' कविता को याद कीजिए।
2. कविता को सुंदर अक्षरों में लिखिए।
3. निम्नलिखित कठिन शब्दों को दो बार लिखिए।

भरोसे
चंचल
भलाई
विघ्न
विविध

END

Scanned with CamScanner